अमर उजाला **My City** 29-09-2016

खास खबर

एमआर वैल्यू बढ़ाकर चीनी की क्वालिटी बेहतर की गई, पहली बार चीनी के अंतरराष्ट्रीय मानक तय

अब खाने को मिलेगी और अच्छी चीनी

532 देश की चीनी मिलों को नए मानक से चीनी बनानी होगी

अमर उजाला ब्यूरो

कानपुर।

एक्सपर्ट कमेटी ऑन शुगर स्टैंडर्ड ने बुधवार को चीनी की गुणवत्ता और उसके मानक बढ़ा दिए हैं। अब देश की 532 चीनी मिलों को इसी मानक के हिसाब से चीनी बनानी होगी। पहली बार चीनी का अंतरराष्ट्रीय मानक बनाया गया है। इसका फायदा चीनी मिलों को भी मिलेगा। वह अपनी चीनी विदेश भी बेच सकेंगे।

शुगर सीजन 2016-17 की चीनी की गुणवत्ता तय करने की जिम्मेदारी नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) कानपुर को मिली। निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन की अध्यक्षता में एक्सपर्ट कमेटी ऑन शुगर स्टैंडर्ड का गठन किया गया। इसकी आधिकारिक मीटिंग बुधवार को एनएसआई में हुई। इसी दौरान भारतीय स्माल और सुपर स्माल ग्रेड की चीनी की माड्यूलेटेड रिफलेक्टेंस (एमआर) वैल्यू बढ़ा दी गई। एमआर वैल्यू से ही चीनी की गुणवत्ता पहचानी जाती है। अब चीनी के दाने ज्यादा चमकदार होंगे। इनमें पीलापन नहीं रहेगा। एक्सपर्ट कमेटी ने पहली बार चीनी की इकमसा (इंटरनेशनल कमीशन फॉर यूनिफार्म मेथड्स ऑफ शुगर एनालिसिस) वैल्यू भी तय कर दी। यह वैल्यू अंतरराष्ट्रीय स्टैंडर्ड को प्रदर्शित करती है।

प्रो. नरेंद्र मोहन।

भारतीय मानक

चीनी	पुराना	नया
स्माल-31	39.9	47
स्माल-30	36.74	43
सुपर स्माल-31	14.73	27

(एमआर वैल्यू)

अंतरराष्ट्रीय मानक

चीनी	इकमसा वैल्यू
स्माल-31	72
स्माल-30	90
सुपर स्माल	65
लार्ज-31	112
लार्ज-30	132
मीडियम-31	76
मीडियम-30	97

60 चीनी मिलों के सर्वे के बाद बने मानक

चीनी की गुणवत्ता और उसकी कलर वैल्यू (एमआर और इकमसा) तय करने से पहले एक्सपर्ट कमेटी ऑन शुगर स्टैंडर्ड ने देश की 60 चीनी मिलों में जाकर सर्वे किया। चीनी की सैंपलिंग की और टेस्टिंग के बाद सुधार के मानक बनाए हैं। इसका बड़ा फायदा चीनी मिल, उपभोक्ताओं को मिलेगा। अच्छी क्वालिटी की चीनी बाजार में आएगी।

प्रोडक्शन कम

शुगर सीजन (2015-16) 30 सितंबर को पूरा होगा। इस बार 252 लाख टन चीनी प्रोडक्शन के अनुमान है। भारत में चीनी की डिमांड 260 लाख टन है। यानी 8 लाख टन चीनी का प्रोडक्शन कम हो गया।

70 लाख टन चीनी का स्टॉक

प्रोडक्शन कम होने का कोई खास असर नहीं पड़ेगा। सत्र 2014-15 में 284 लाख टन चीनी बनी थी। इससे पहले भी पैदावार अच्छी थी। इसी का नतीजा है कि 70 लाख टन चीनी बचत में रखी गई है।

आज **29-09-2016**

महीन शक्कर की गुणवत्ता अच्छी हुई

बैठक में शामिल एन.एस.आई के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन व अन्य।

कानपुर, 28 सितम्बर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर, निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने आज विशेषज्ञ समिति के सदस्यों के साथ हुई बैठक में पेराई सत्र 2016-17 (एक अक्टूबर 2016 से 30 सितम्बर 2017) के लिए शर्करा मानकों को जारी कर दिया है। बैठक में सदस्यों ने स्माल एवं सुपर स्माल एवं दो कलर श्रेणी 31 एवं 30 में क्वालिटी इम्प्रूड पर मुहर लगा दी है। अब स्माल (छोटे) एवं सुपर स्माल (महीन) दाने वाली चीनी क्वालिटी बेस्ड और चमकदार होगी। भारतीय चीनी मानक आईएस 498 के अनुसार ग्रेड का निर्धारण चीनी के दानें के आकार एवं ठोस अवस्था में चीनी के कलर होता है जिसका माड्यूलेटेड रिफ्लेक्टेंस वैल्यू द्वारा किया जाता है। शर्करा मानक की बोतल की चीनी की तुलना उत्पाद चीनी से कर उपभोक्ता आसानी से चीनी की गुणवत्ता व ग्रेड का आकलन कर सकते हैं। निदेशक नरेंद्र मोहन ने बताया कि चीनी एक भंगुर उत्पाद है। चीनी के मानकों को

80 फीसदी तक खपत छोटे-महीन दाने वाली चीनी

गुणवत्ता के साथ निगरानी की जाती है। पूर्व देश में 29 श्रेणी का भी मानक प्रचलन था जो श्रेणी कलर में सुधार के कारण बंद कर दिया गया। अब आईएस 498 में आवश्यक संशोधन किया जा रहा है। चीनी की कलर वैल्यू में 37 से 47, 14 से 27 और 36 से 43 तक ग्रेड बढ़ाया गया है जिसमें छोटे व महीन दाने की चीनी क्वालिटी के साथ दाने और चमकदार होंगे। इस दौरान सार्वजिनक वितरण मंत्रालय से सहायक निदेशक सुरेश चंद्रा के अलावा अन्य विशेषज्ञ समिति के सदस्य भी मौजूद रहे।

लगातार गिर रहा है चीनी का उत्पादन

कानपुर, 28 सितम्बर। उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, गुजरात समेत देशभर में 532 चीनी मिलो में पेराई हो पाई है, जिसमें उत्तर प्रदेश में चीनी मिलें का आकड़ा 120 ही रह गया है। महाराष्ट्र और कर्नाटक में सूखे के कारण लगातार गन्ना की फसल बुरी तरह प्रभावित हुई है जिसके कारण चीनी का उत्पादन भी गिर रहा है। विगत वर्षों की तुलना में चीनी का उत्पादन 284 लाख टन से 235 लाख टन रह गया।

हिन्दुस्तान 29-09-2016

एनएसआई ने देश के लिए सात चीनी के मानक रिलीज किए, पीडीएस से मानक वाली शुगर मिलना तय

भारतीय चीनी की चमक और बढ़ेगी

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) ने बुधवार को मानक निर्धारण की विशेष समिति ने सात तरह की चीनी के राष्ट्रीय मानक जारी कर दिए। पहली बार चीनी के रंग में बड़ा बदलाव किया गया है। अब विशेष रूप से छोटे और बहुत छोटे दानों वाली चीनी को और सफेद बनाया जाएगा। तय हुआ है कि अब राज्य भी पीडीएस वितरण के लिए तय मानकों वाली इसी चीनी की खरीद करें।

हर वर्ष चीनी के मानक आकार और रंग के आधार पर तय होते हैं। इसका सत्र 01 अक्तूबर 2016 से 30 सितंबर 2017 तक होता है। भारतीय चीनी के मानक आईएस 498 के अनुसार तय होते हैं। रंग का आकलन मॉड्यूलेटेड रिफ्लेक्टेंस वैल्यू (एमआरवी) से किया जाता है। बैठक में खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, भारतीय मानक ब्यूरो, भारतीय चीनी संघ और भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के प्रतिनिधि भी शामिल हुए।

बुधवार को राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में चीनी की गुणवत्ता पर बैठक हुई। • हिन्दुस्तान

सभी राज्यों के लिए खरीद अनिवार्य

शर्करा निदेशालय के उप निदेशक और मानक निर्धारण समिति के सदस्य सुरेश चन्द्रा ने कहा कि सभी राज्यों को पत्र लिखकर पीडीएस में इस्तेमाल होने वाली चीनी खरीदने के लिए विवश किया जाएगा। अगर कोई शिकायत आती है तो मिलों के खिलाफ कार्रवाई होगी।

चीनी मिल खरीदती हैं बोतल

एनएसआई मानक की चीनी बोतल में चीनी मिलों को उपलब्ध कराई जाती है। इसे अनिवार्य रूप से मिलों को खरीदना होता है। मानक बोतलों की बिक्री वर्ष 2014-15 में 1426751 से बढ़कर 2015-16 में 1965400 रुपए हो गई।

देश में चीनी के सात मानक

ग्रेड	एमआर (2015-16)	एमआर (2016-17)
एल-31	92.93	90
एम-31	69.12	70
एस-31	39.94	47
एसएस-31	14.73	27
एल-30	81.99	85
एम-30	61.08	62
एस-30	36.74	43

आधारभूत आंकड़े

- देश में कुल चीनी मिलें : 735 (532 क्रियाशील)
- प्रदेश में चीनी मिलें : 149 (120 क्रियाशील)
- उत्पादन (2014-15) : 284 लाख टन
- उत्पादन (2015-16) : 252 लाख टन (अपेक्षित)
- उत्पादन (2016-17) : 235 लाख टन (संभावित)

शुगर के बताए गए मानक

एनएसआई के निदेशक और मानक निर्धारण समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर नरेन्द्र मोहन ने बताया कि स्माल और सुपर स्माल दानों वाली दो तिहाई चीनी पेयपदार्थ और फार्मास्यूटिकल (दवाओं) में खर्च होती है। इसमें सफेदी की अधिक जरूरत होती है। पिछले वर्ष एस-31 साइज की चीनी का मानक 39.94 एमआर था। इस बार यह मानक बढ़ाकर 47 कर दिया गया है। इसी तरह सुपर स्माल (एसएस) का कलर मानक 14.73 से बढ़ा कर 27 एमआर कर दिया गया है।

एनएसआई में 8 विदेशी छात्रों ने दी दस्तक

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान अब आईआईटी के बाद दूसरा ऐसा संस्थान बन गया है जहां पढ़ने वाले विदेशी छात्रों की संख्या बढ़ रही है। वर्तमान में छह विदेशी छात्रों ने यहां प्रवेश की प्रक्रिया पूरी कर ली है। दो विदेशी छात्रों का अनापत्ति प्रमाणपत्र न मिलने से प्रवेश नहीं हो सका।

आईआईटी में विदेशी छात्र पढ़ते रहे हैं। इसके बाद सीएसए में अफगानिस्तान के छात्र यहां पढ़ने आए। तीन छात्र डिग्री पूरी कर चले गए। यहां वर्तमान में एक भी विदेशी छात्र नहीं है। विदेशी छात्रों के लिए यहां करोड़ों खर्च कर इन्टरनेशनल हॉस्टल बनाया गया था। एनएसआई में 1994 तक विदेशी छात्र पढ़ने आते थे। एशिया का अपनी तरह का इकलौता संस्थान होने से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसकी पहचान रही है। दो दशक से ज्यादा समय से यहां विदेशी छात्र नहीं आ रहे थे। एनएसआई के निदेशक नरेन्द्र मोहन ने बताया कि भूटान के तीन, यमन के दो और बांग्लादेश के एक छात्र ने प्रवेश ले लिया है। केन्या और बांग्लादेश के दो छात्रों को अपने देशों से एनओसी नहीं मिल पाई।

बढ़ा रुतबा

- राष्ट्रीय शर्करा संस्थान आईआईटी के बाद बना पसंद
- छह की प्रवेश प्रक्रिया पूरी, दो को अपने देशों से नहीं मिली एनओसी

दैनिक जागरण **29-09-2016**

जितनी चमकेगी चीनी उतनी होगी महंगी

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में बैठक करते निदेशक नरेंद्र मोहन। जागरण

एनएसआई से मानक तय

- छोटे व महीन दाने वाली चीनी के मानकों में बड़ा परिवर्तन
- बिना मानक खरीदे पैकिंग पर नहीं लगा सकेंगे मार्क

कानपुर, जागरण संवाददाता : अब उपभोक्ता और चमकदार गुणवत्तापूर्ण चीनी खा सकेंगे लेकिन इसके लिए उन्हें कुछ अधिक कीमत चुकानी होगी। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) में बुधवार को चीनी के मानक तय कर उसकी खरीदारी भी अनिवार्य कर दी गई जिसमें छोटे व महीन दाने वाली चीनी के मानकों में बड़ा परिवर्तन हुआ। अब बिना मानक खरीदे कोई भी मिल प्रबंधन अपनी पैकिंग में मार्क नहीं लगा सकेगा। मानक खरीदने से गुणवत्तापूर्ण चीनी की कीमत बढ़नी स्वाभाविक है। नये मानक एक अक्टूबर 2016 से 30 सितंबर 2017 तक के लिए जारी किए गए हैं।

एनएसआई में हुई भारत सरकार की विशेषज्ञ समिति की बैठक में चीनी के इंडियन स्टैंडर्ड (आईएस) 498 में संशोधन किया गया। उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, भारतीय मानक ब्यूरो, भारतीय गन्ना अनुसंधान व भारतीय चीनी मिल संघ के सदस्यों ने नये मानक जारी किए।

एनओसी न मिलने से विदेशी छात्रों का प्रवेश रद

कानपुर : एनओसी न मिलने पर एनएसआई प्रशासन ने राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में दाखिले के लिए आवेदन करने वाले कीनिया और बांग्लादेश के दो छात्रों का प्रवेश रद कर दिया है। दोनों विदेशी छात्रों ने शुगर टेक्नोलॉजी पाठ्यक्रम के अंतर्गत सत्र 2016-17 में दाखिला, लेने के लिए आवेदन किया था। चीनी मिल में काम करने वाले दोनों छात्रों को मिल प्रशासन की ओर से एनओसी जारी नहीं हुआ जिसके चलते दोनों का प्रवेश रद कर दिया गया। वर्तमान समय में यहां पर नेपाल, भूटान व यमन के छह छात्र पढ़ रहे हैं।

एमआर वैल्यू में हुआ यह सुधार

ग्रेड	2015-16	2016-17
एल-31	92.93	90
एम-31	69.12	70
एस-31	39.94	47
एसएस-31	14.73	27
एल-30	81.99	85
एम-30	61.08	62
एस-30	6.74	43

(एम-मीडियम, एस-स्माल व एसएस-सुपर स्माल)

गिर रहा चीनी का उत्पादन

2014-15	284 लाख टन
2015-16	252 लाख टन संभावित
2016-17	235 लाख टन संभावित

(एनएसआई से प्राप्त आकड़े। उत्पादन में कमी का कारण कर्नाटक व महाराष्ट्र में गन्ने की कम पैदावार)

खराब से बेहतर व बेहतर से बेहतरीन का उद्देश्य

एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि खराब चीनी उत्पादन को बेहतर, बेहतर को बेहतरीन करने एवं उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के उद्देश्य से मानक तय किए गए हैं। देश में 532 और उत्तर प्रदेश में 120 चीनी मिलें संचालित हैं। सभी में बेहतरीन चीनी का उत्पादन हो, इसके लिए प्रतिवर्ष मानक निर्धारित किए जाते हैं। मानकों को लागू कराने के लिए प्रदेश के शुगर सेक्रेट्री व केन कमिश्नर को पत्र लिखा जाएगा।

चीनी की नई इकम्सा वैल्यू जारी

एनएसआई की हुई बैठक में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बड़े उपभोक्ताओं को ध्यान में रखते हुए चीनी की नई इकम्सा वैल्यू भी जारी की गई।